हवाएं पढ़ने लगती हैं

अधूरी, खुली छोड़कर किताबों को,
हम चल देते हैं अपने घरों में,
और हवाओं को दिख जाती हैं खुली किताबें
फिर होती है आवाज पन्नों के पलटने की,
हवाएं पढ़ने लगती हैं किताबें
पन्ने दर पन्ने उत्सुकता में या जल्दबाजी में
पर हमारे आने से पहले पढ़ना चाहती है सबकुछ
वो सबकुछ जो हम छोड़ देते हैं बीच में
हवाएं पढ़ने लगती है
किताबों के वो हिस्से
जो कोरे पन्नों से ढके रहते हैं
हवाएं पढ़ने लगती हैं
भूले गये उन पाठों को
जिन्हें छोड़कर बढ़ जाते हैं
हम अगले पन्नों पर
हवाएं पहुंचने देती है
हर पन्ने पर धूप और गर्मी

- दिलिप
30, एन.ई.बी. सुभाष नगर
अलवर, राजस्थान।